# KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY

Website: www.kgcollege.ac.in Phone: 0481 2505212 Email: mail@kgcollege.ac.in

## 3.3.2 BOOKS AND CHAPTERS

# 2020-21

| SL NO | NAME OF AUTHOR | BOOK |
|---|---|---|
| 1 | Dr A Priya | Bharateey Santh Sahity Mein Jeevan Mooly |
| 2 | Dr A Priya | Hindi Sahity Mein Third Gender Vimarsh |
| 3 | Dr A Priya | Malayalam Sahithya Pradeek Aur Prathiman |
| 4 | Dr A Priya | Sahity Ki Ankhon Se Paryavaran Ki Jhalak |
| 5 | Dr A Priya | Hindi Sahity Aur Rashtravad |
| 6 | Dr A Priya | Hindi Sahity Evam Aadivasi Vimarsh |
| 7 | Dr A Priya | Utharadhunik Samay Aur Samakaleen Hindi Kavitha |
| 8 | Dr Vipin K Varughese | Work life conflicts of employees of Banks |

Prof.(Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

# भारतीय संत साहित्य में जीवन मूल्य

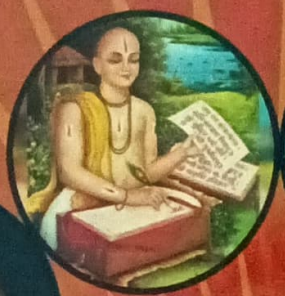
तुलसीदास

कबीरदास

संत एकनाथ

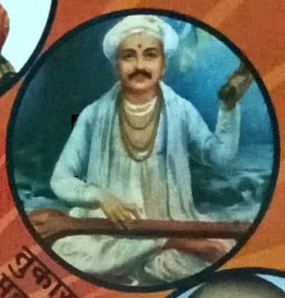
तुकाराम महाराज

गुरु नानक

संत वेमना

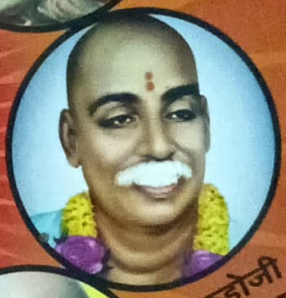
तुकडोजी महाराज

संत दादूदायलू

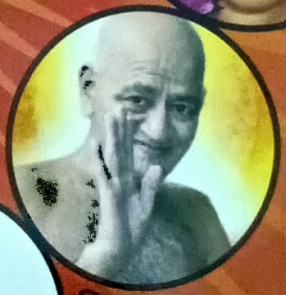
विद्यासागर महाराज

गुरु जम्भेश्वर

संत पीपा

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

डॉ. कमलकिशोर गुप्ता

श्री बालाजी प्रकाशन, नागपुर

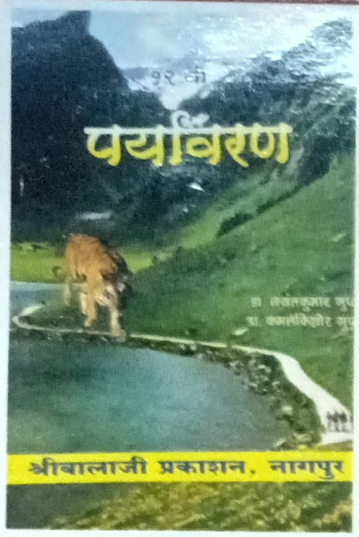


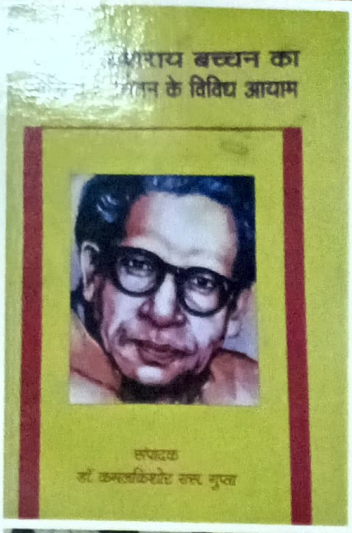


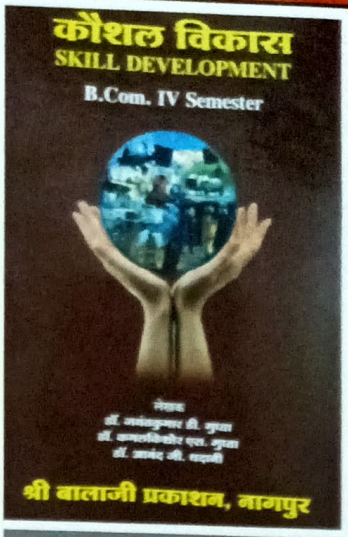


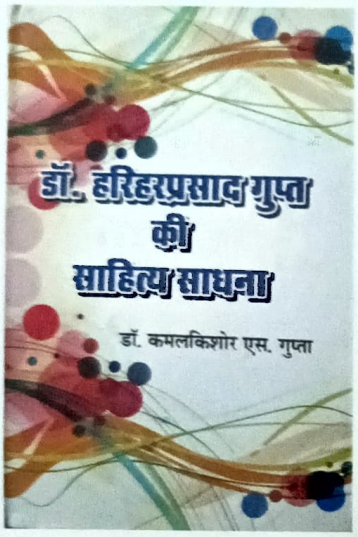


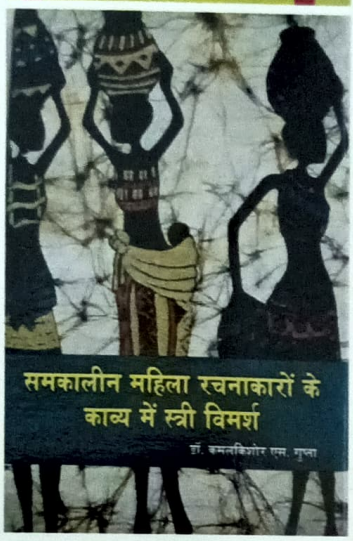


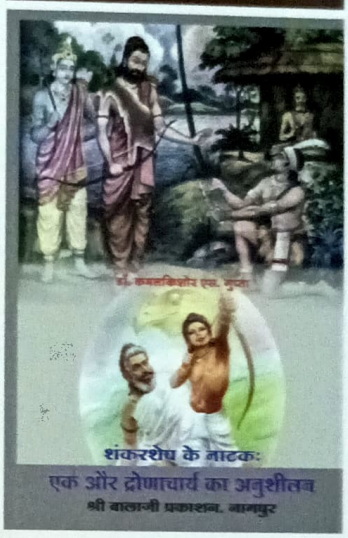


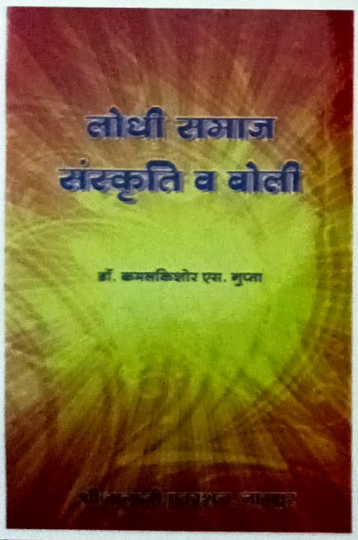


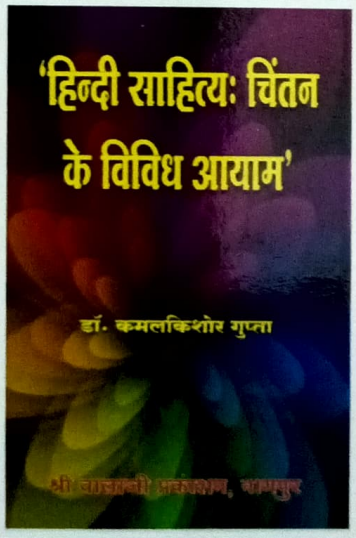


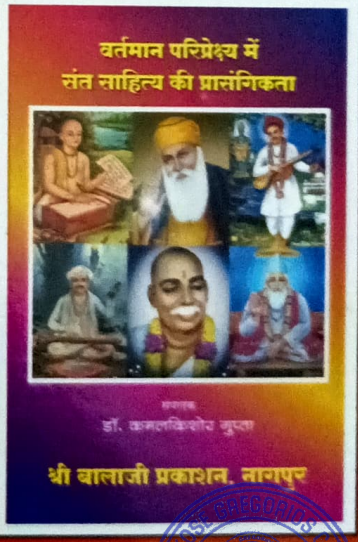


Rs.400/-

ISBN : 978-93-84855-13-0

श्री बालाजी प्रकाशन, नागपुर

# मलयालम के लोककवि : एषुत्तच्छन

डॉ. प्रिया ए.

मलयालम की रामकथा संबन्धी रचनाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय सोलहवीं शताब्दी में जीवित एषुत्तच्छन ही रहे हैं, जो विषय एवं भक्ति चित्रण में तुलसीदास के अधिक निकट है। उन्हें आधुनिक मलयालम भाषा के पिता माना जाता हैं। उनका अध्यात्मरामायणं केरलीयों की धर्मपोथी है। एषुत्तच्छन का अध्यात्मरामायणं मुख्यतः संस्कृत अध्यात्मरामायणं का ही मलयालम रूपान्तर है। अध्यात्मरामायणं के विशेष गंभीर प्रसंगों में बाललीला, अहल्यामोक्ष, विच्छिन्नाभिषेक, अगस्त्यस्तुति, रावण मारीच संवाद, लंकादहन आदि प्रमुख है। अध्यात्मरामायणं में एषुत्तच्छन ने किलिप्पाट्टु नामक काव्य रूप को प्रस्तुत किया।

एषुत्तच्छन के बाद रामकथात्मक काव्यों में केरलवर्मा के केरळवर्मा रामायण, आट्टक्कथा के रूप में रचित कोट्टारक्करा तंपुरान का रामनाट्टम आदि का प्रमुख स्थान है। वाल्मीकि रामायण पर आधारित काव्य होने के कारण केरलवर्मा रामायण का दूसरा नाम 'वाल्मीकि रामायण किलिप्पाट्टु' है। लोकजीवन से इसका यह संबन्ध है कि लोकजीवन से जुडी हुई कथकळि काव्यधारा को इस रामकाव्य ने बहुत कुछ दिया। इस नाट्यप्रधान काव्य का प्रारंभिक रूप रामनाट्टम था। रामकथा के आठ प्रसंगों को आठ दिनों के काव्य का रूप दिया गया। तुल्लल काव्यधारा के प्रमुख कवि श्री कुंचन नंपियार ने छः प्रमुख रामकथाश्रित तुल्लल काव्य लिखे हैं। सीता स्वयंवर इसमें उल्लेखनीय है। आज भी अनेक ग्रामीण मन्दिरों में उत्सवों के समय इस कला का प्रदर्शन होता है। लोकजनता इसे अपनी कला के रूप में मानती है। आधुनिक युग में रामकाव्य का वह स्वरूप नहीं रहा जो प्राचीन युग में था। मलयालम रामकाव्य परंपरा में सर्वलक्षणों से युक्त महाकाव्य के रूप में अषकतु पद्मनाभकुरुप कृत रामचंद्रविलास को श्रेष्ठ माना जाता है। तुलसी रामायण से विकसित श्रीराम भक्ति इस रचना का मार्गदर्शक है।

जिस प्रकार उत्तरभारत की जनता गोस्वामी तुलसीदास और उनके रामचरितमानस को कंठहार के रूप में मानकर अपने को धन्य मानती है, उसी प्रकार दक्षिण केरल की जनता के सामने एषुत्तच्छन और उनके अध्यात्मरामायणं किलिप्पाट्टु का स्थान ऊँचा है। पहले देखा जा चुका है कि हिन्दी की तरह मलयालम साहित्य में भी रामकथा की उत्पत्ति लोकगीतों से हुई है। ये लोकगीत लोकजीवन में गहरा प्रभाव डालने में सफल भी बन जाते हैं। भारतीय जनता के आराध्य पुरुष श्रीराम के चरित को भक्ति से परिपुष्ट करते हुए

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

# हिन्दी साहित्य में
# थर्ड जेंडर विमर्श

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

संपादक
डॉ. पायल लिल्हारे
डॉ. श्याम मोहन पटेल

आज हम हाशिए पर पड़े उन समुदायों की बात करते हैं जो समाज में हमेशा से उपेक्षित रहे हैं, उन सब में सर्वाधिक उपेक्षित हैं- किन्नर। ऐसे में किन्नर विमर्श को केंद्र में लाना व्यापक मानवीय दृष्टि का परिचायक है।

हमारा समाज जीव दया की बात करता है, पशु-पक्षियों को पालता है, विकलांगों को भी घर में संरक्षण देता है किंतु किन्नरों को हमारा रूढ़ मानसिकता वाला समाज, आज भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है जबकि वह भी शारीरिक व मानसिक स्तर पर सामान्य स्त्री-पुरुषों के समान ही है।

अस्मितामूलक विमर्श का मुख्य ध्येय उनके (किन्नरों के) अस्तित्व को स्वीकार कर उन्हें घर, परिवार व समाज में समान अधिकार व सहज मानवीय गरिमायुक्त जीवन जीने के अवसर प्रदान करना है। किन्नरों को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाते हुए उन्हें समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनाना एवं उनके प्रति समाज की मानसिकता में सकारात्मक व्यापक परिवर्तन लाना इस विमर्श का उद्देश्य है।

**-प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा**

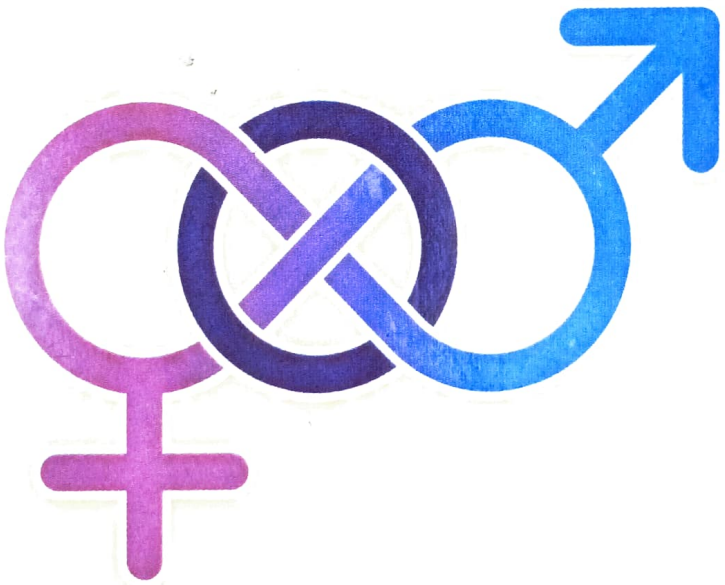

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Also available at : flipkart amazon

वान्या पब्लिकेशंस
3ए-127 आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर-208021
9450889601, 7309038401
vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
www.vanyapublications.com

₹650.00
ISBN 978-93-90052-24-0
9 789390 052240 >

rudra graphics

ISBN : 978-93-90052-24-0

**मूल्य : छः सौ पचास रुपए मात्र**

पुस्तक : **हिन्दी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श**

संपादक : डॉ. पायल लिल्हारे, डॉ. श्याम मोहन पटेल

© : संपादक

प्रकाशक : **वान्या पब्लिकेशंस**

3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,

कानपुर - 208 021

Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com

info@vanyapublications.com

Website : www.vanyapublications.com

Mob. : 9450889601, 7309038401

संस्करण : **प्रथम, 2020**

चित्रकार : के. रवीन्द्र

मूल्य : 650.00

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, कानपुर

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

# 11

# मलयालम के नाटक और अस्तित्व की तलाश

डॉ. प्रिया ए.

वर्तमान साहित्य में विमर्श का दौर चल रहा है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, पारिस्थितिक विमर्श आदि। साहित्य में इन विमर्शों का ध्येय यही होता है कि हाशिएकृत वर्गों को समाज की मुख्यधारा में प्रतिष्ठित करना। आजकल विमर्श के तहत तीसरे लिंग को समाज की मुख्य धारा में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जाता है। अर्थात् इन्हें केन्द्र में रखकर समाज, संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए उनकी स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की प्रक्रिया ही तीसरा लिंग विमर्श है। इसके द्वारा समाज में हिजड़े के प्रति जागृति लाने तथा उनके अस्तित्व एवं पहचान को स्थापित करने की कोशिश होती है।

तीसरे लिंग के अंतर्गत हिजड़ा कहे जानेवाली मानव–प्रजाति ही आती है। हिजड़ा से तात्पर्य उन लोगों से है, जिनके जननांग का विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है। ये पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के हैं। अर्थात् ये न पुरुष हैं न स्त्री। वे न तो संबन्ध बना सकते हैं न ही गर्भधारण कर सकते हैं। अंग्रेजी में इन्हें Transgender कहा जाता है। भारत में इनको कई नामों से संबोधित किया जाता है। जैसे– किन्नर, उभयलिंगी, शिखंडी, गण्डू, चक्का आदि। भारतीय साहित्य में तृतीय लिंगी विमर्श हिजड़ा समाज के बारे में, उनकी समस्याओं के बारे में अवगत कराने के साथ–साथ उनके उत्थान के लिए इच्छुक भी रहता है।

साहित्य के क्षेत्र में नाटक एक सशक्त विधा है, जिसकी सफलता की परख रंगमंच पर होती है। सामाजिक समस्याओं का आकलन समय के अनुरूप नाटकों में चित्रित किया जाता है। मलयालम नाटक साहित्य में भी हिजड़ाओं के जीवन की कारुणिक दास्तान को मर्मस्पर्शी ढंग से चिन्हित किया गया है। केरल के एरणाकुलम जिला के प्रसिद्ध नाटककार हैं – मनोजकुमार सी.एस और विनोद कुमार सी.एस। विद्यालय व महाविद्यालय के छात्रों को एकत्रित करके 'सेलिब्रेशन्स थियेटर ग्रुप' नामक नाटक संघ का आयोजन इन दोनों ने मिलकर किया है। इनके निर्देशन के आधार पर मलयालम में तीन नाटकों का मंचन हुआ था। ये

# पूर्वापर ५३-५५

## मलयालम विशेषांक

अक्कित्तम ज्ञानपीठ स्मृतिचिह्न के साथ


सम्पादक
सूर्यपाल सिंह

अतिथि सम्पादक
आर. सुरेन्द्रन 'आरसु'



KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

# रफ़ीक अहमद की दो कविताएँ

## अनुवाद- डॉ० प्रिया ए०

*(मलयालम के श्रेष्ठ कवि रफ़ीक अहमद की दो कविताओं का हिन्दी अनुवाद)*

# माँ

नदी माँ है, वह शुष्कता मेरी आँखों के सामने है
यह पतलापन, मैं पहचानता हूँ
वह चेहरा, विवर्ण हृदय की नीली नसें
पेट पर विपत्तियों की झुर्रियाँ, सहन की
सीढ़ियाँ उतरती आँखें, वही मौन।
पर्वतों के पीछे
आगे की ओर हाँफते हुए नदी का बहाव
अपने प्यारे बच्चों की प्यास बुझाती
न कर पाती एक पल भी आराम
कयामत से पसीजा जल न बचा पाती।
छोटी मछलियों की आँखों में काजल लगाती,
शिला के भाल चूमती,
कुमुदिनी के लिए लोरियाँ गाती,
निरवद्य प्रेम का प्रत्यक्ष भाव भरती।
नदी माँ है; अपने हलके बहाव में
तड़पने पर भी; रेतीली हँसी से
पीले रंग बिछाते धूप की जिह्वा चूसती
तनाव मुक्त छाती पर मंगलसूत्र के-
हल्के धागे का रखती मान- निर्मल वरदान।
जीवन संग्राम को वृथा मानते-
उसे समुद्री लहरों में घुलते देखकर भी
रखती अपना निष्काम कर्मव्रत जारी।
पुरखों ने नदी को माँ माना-
जिसकी बारीकियों में मैं निमग्न हो जाता-
तो सारे बदन में उमड़ती है जलन।

-०-

('शिवकामी' नामक संकलन से)

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

# साहित्य की आँखों से पर्यावरण की झलक

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

संपादक

डॉ. रंजित एम् • डॉ. सूर्या बोस

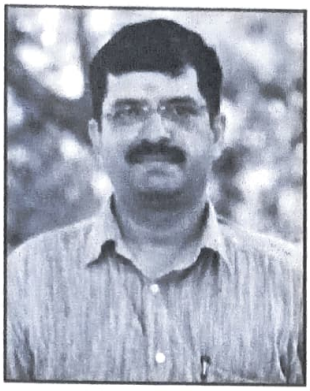


**डॉ. रंजित एम्**

**मातृभाषा** : मलयालम

**शिक्षा** : एम.ए. (हिंदी) कालीकट विश्व विद्यालय, एम.फिल (हिंदी) कालीकट विश्व विद्यालय, पी.एच.डी (हिंदी) कालीकट विश्व विद्यालय, बी. एड. (हिंदी) कणणूयर विश्वविद्यालय

**प्रकाशन**

1. अज्ञेय के तार सप्तक
2. हिंदी कथा साहित्य में नारी (सम्पादन )
3. हिंदी सूफी काव्यों में प्रकृति चित्रण (शोध)
4. हिंदी सूफी काव्यों में समाज दर्शन (शोध)
5. भारतीय साहित्य में सिविल सैनिक संबंध (संपादन )
6. एक प्याला चाय (अनुदित कहानी संग्रह)
7. अनार अब भी फूलते है (अनुदित कहानी संग्रह)

**शोध निदेशक** : कालीकट विश्व विद्यालय

**संपर्क** : अध्यक्ष, हिंदी विभाग,एम.इ.एस कल्लटी कोलेज, मन्नारककाड, पालक्काट जिला, केरल-678583

मोबाइल : 09387441300

ई-मेल : ranjutkr@gmail-com



KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502



**प्रकाशक**

**जवाहर पुस्तकालय**

सदर बाजार, मथुरा-281001 (उ.प्र.)

*ई-मेल* : jawahar.pustakalaya@gmail.com

ISBN : 978-81-946862-3-1

9 788194 686231

( 10 )

# विनोद कुमार शुक्ल की कविता में पर्यावरण विमर्श

–डॉ. प्रिया ए.

वर्तमान समय भीषण पर्यावरण संकट का समय है। मनुष्य ने एक ओर विकास एवं उन्नति के नाम पर समस्त जीवसृष्टि में मानव-सभ्यता को अति उच्च शिखर पर स्थापित किया है तो दूसरी ओर उसी विकास यात्रा ने मानव-सभ्यता को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। इसके फलस्वरूप वर्तमान समाज भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उदारीकरण, बहुराष्ट्रीय साम्राज्यवादी नीतियाँ आदि के गिरफ्त में जकड़ा हुआ है। साथ ही बदलते वैश्विक परिदृश्य और औपनिवेशिक संस्कृति ने मानव जीवन पर गहरी छाप छोड़ दी है। ऐसे विकल परिवेश में अपने समय के प्रति जागरूक साहित्यकार की रचनाओं में इन संकटों का स्पष्ट प्रतिफलन होना स्वाभाविक ही है। इस सन्दर्भ में हिंदी साहित्य की समकालीन कविता उल्लेखनीय है, जिसमें वर्तमान समाज में व्याप्त मानवीय संकट से सचेत कवि प्रतिरोध की जरूरत की ओर हर जगह संकेत करते हैं। अत: समकालीन कविता में कविता का सामाजिक पक्ष दृष्टव्य है।

समकालीन कवि विनोद कुमार शुक्ल अपनी रचनाओं में पारिस्थितिकी का सजीव मानचित्र खींचनेवाले हैं। हिंदी कविता के लोकतंत्र और लोकायतन में विनोद कुमार शुक्ल की कविता अनूठी सहजता के साथ उपस्थित होती है। मनुष्य और प्रकृति के बीच संबन्धों के साझा-सौंदर्य को कवि अपनी रचनाओं में स्थान देते हैं। अतिरिक्त नहीं (2000), कविता से लंबी कविता (2001), आकाश धरती को खटखटाता है (2006), कभी के बाद अभी (2012) आदि उनके काव्य संकलन है। इन काव्य संकलनों में प्रकृति को केंद्र में रखा गया हैं। मानव जीवन यथार्थ के निकट रहनेवाली हमारी सांस्कृतिक आधारशिला है

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

# हिन्दी साहित्य और राष्ट्रवाद

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

डॉ. रघुनाथ पाण्डेय
डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी

## डॉ. रघुनाथ पाण्डेय

वृत्ति : शिक्षाविद एवं साहित्यकार। क्षेत्रीय संयोजक- पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी शिलांग (मेघालय) भारत, संयोजक- राष्ट्रवादी लेखक संघ, उत्तर प्रदेश, चेयरमैन- श्रीअरविन्दो सोसायटी, केन्द्र-गोण्डा, उत्तर प्रदेश

सम्मान : साहित्य भूषण (काव्य रंगोली पत्रिका), साहित्य अकादमी भोपाल (म.प्र.), क्रान्तिधरा साहित्य अकादमी मेरठ द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान

साहित्यिक अवदान : 'पंकिल पुलिन पर' (कविता संग्रह), 'खरी पाँखुरी' (मुक्तक काव्य), 'बाल-साहित्य' (सम्पादन), 'ज्योति प्रखर' (सम्पादन), 'यादगार' वार्षिक (सम्पादन), 'मामी हैं लरकोरि सुगऊ' (लोक साहित्य समीक्षा), 'शब्द कहीं मर न जायँ' (लोक साहित्य सर्वेक्षण), पूर्वोत्तर भारत और हिन्दी (शोध ग्रन्थ), हिन्दी के विविध आयाम, विश्व पटल पर हिन्दी, 20 शोधपत्र (विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थाओं में प्रस्तुत), 20 शोधपत्र प्रकाशित ।

स्थाई पता : 753, सिविल लाईन, गोण्डा (उ.प्र.) मोबाइल.: 9450527126

ई-मेल : rnp26.11@gmail.com


## डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी

शिक्षा : सुभारती विश्वविद्यालय से कम्प्यूटर में परास्नातक, कानपुर विश्वविद्यालय से पी-एच.डी.,

वृत्ति : अध्यापन एवं लेखक। 50 राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पत्र वाचन, लगभग 50 शोधलेख प्रकाशित।

मौलिक पुस्तक : जनसंख्या शिक्षा, प्रयागराज कुम्भ एक सांस्कृतिक धरोहर, पं. दीनदयाल उपाध्याय, भारत की सांस्कृतिक संजीवनी गंगा, पूर्वोत्तर भारत और हिन्दी (शोध ग्रन्थ), हिन्दी के विविध आयाम (शोध ग्रन्थ), विश्व पटल पर हिन्दी।

सम्मान : साहित्य अकादमी भोपाल (म.प्र.), क्रान्तिधरा साहित्य अकादमी मेरठ द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान।

सम्प्रति : प्रधानाचार्य, माध्यमिक शिक्षा विभाग (उ. प्र.) मोबाइल.: 9415480576

ई-मेल : awasthidilip98@gmail.com



Also available on amazon | YouTube SUBSCRIBE TO OUR CHANNEL Nikhil Publishers Agra

Scan QR Code


# हिन्दी साहित्य और राष्ट्रवाद

डॉ. रघुनाथ पाण्डेय

डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी


Nikhil

**Nikhil Publishers & Distributors**

37, 'Shivram Kripa' Vishnu Colony,
Shahganj, Agra-282010 (U.P.) India
Mo. 9458009531-38
E-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
Visit us : www.nikhilbooks.in
www.nikhilbooks.com

ISBN : 978-93-90272-10-5

₹ 349.00 $ 20



KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, without written permission from the publisher or author.

**ISBN : 978-93-90272-10-5**

• © सम्पादक

• **प्रथम संस्करण : 2020**

• **मूल्य : ₹ 349/- मात्र $ 20**

• *शब्द सज्जा :*
**विष्णु ग्राफिक्स**

• *मुद्रक :*
श्रीपूजा प्रिन्टर्स

• प्रकाशक :
**निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स**
37, 'शिवराम कृपा' विष्णु कालोनी शाहगंज, आगरा
मो. : 9458009531-38
e-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
website : www.nikhilbooks.in

# 7

# समकालीन हिंदी कविता में राष्ट्रवाद की पुनःप्रतिष्ठा

'राष्ट्रवाद' राष्ट्र की स्थापना करने का आधार है, जो राष्ट्र के प्रति प्रेम पर टिका है। राष्ट्र प्रेम आत्मा से जुडी एक गहरी सच्ची भावना है। इस भावना के अंतर्गत इतिहास, परंपरा, भाषा, जातीयता और संस्कृति आदि तत्व आते हैं। इन्हीं आधारभूत तत्वों पर जनता की आस्था टिकी रहती है। ये आधारभूत तत्व जनता की आस्था की आधारभूमि है। राष्ट्रवादी भावना द्वारा जनता में प्रेम और एकता का संचालन होता है। अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं प्रगति बनाए रखने का सिद्धाँत भी राष्ट्रवादी भावना को पोषित करता है।

राष्ट्रवाद एक ऐसी भावना है, जो देश की जनता को संगठित रखती है, गुलामी के दिनों में स्वतंत्रता की चेतना फूंकती है, मुक्ति संग्राम में मर मिटने का आह्वान करती है और कवियों तथा रचनाकारों का राष्ट्र, जाति और धर्म की रक्षा के लिए आन्दोलन जगाने और राष्ट्र पर सर्वस्व समर्पण की भावना भरनेवाली रचनाएं लिखने की प्रेरणा भी देती है। इस राष्ट्रीयता का प्रारम्भ एक भावना के रूप में 19 वीं शताब्दी में हुआ। हिंदी के राष्ट्रीय साहित्य पर पश्चिम का गहरा प्रभाव पड़ा है।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य धारा का आरम्भ भारतेन्दु युग से हुवा था। आधुनिक युग में सामाजिक उत्थान, राजनीतिक जागरण, एवं नवनिर्माण की परिकल्पना ही इसका लक्ष्य था। भारतेन्दु साहित्य में प्रस्फुटित होकर द्विवेदी युग में भी राष्ट्रीय काव्यधारा का प्रवाह गतिशील रहा था। दिवेदी युग के पुरोधा कवि मैथिली शरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्णशर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर आदि कवियों की कविता में राष्ट्रीय जागरण की भावना एवं राष्ट्र प्रेम सशक्त रूप में प्रकट होती है। सत्तरोत्तर हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना के विशिष्ट स्वर विद्यमान है। स्वतन्त्र भारत में होनेवाले आर्थिक राजनैतिक और धार्मिक परिवर्तन ने आधुनिक काव्य में राष्ट्रीय सोच को विकसित किया और जन चेतना का महत्वपूर्ण अंग बना दिया। समकालीन कविता भी समय के सापेक्ष् चलकर जन चेतना को प्रवाहमय बनाए रखने के कर्म को निभाती है।

ST. GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

अपारलिप्सा आदि अनेक मनुष्यता – विरोधी परिस्थितियों को बल दिया है। मनुष्य जीवन पर वस्तुओं के आधिपत्य के खिलाफ समकालीन कवियों की सोच उभर रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों का समन्वित स्वरूप है। अपसंस्कृति के पनपने कारण हमारी अर्थव्यवस्था का संतुलन बिगड़ गया। आर्थिक संकट ने मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय व्यक्तियों के जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया। समाज की इस बदहाली ने समकालीन कवियों को संवेदनशील बनाया है। उनकी ऐसी भावना का विकास आधुनिक विश्व में राजनीतिक पुनर्जागरण का परिणाम है। ऐसे पुनर्जागरण से ही राष्ट्रवाद की पुन: प्रतिष्ठा सभव होगी।

सन्दर्भ –


1. धूमिल – संसद से सड़क तक, पृ. 108
2. मुक्तिबोध – मुक्तिबोध रचनावली – भाग 2, पृ. 260
3. रघुवीर सहाय –एक समय था, पृ. 57
4. कात्यायनी – इस पौरुषपूर्ण समय में, पृ. 85
5. वागर्थ – अगस्त 2009 – पृ. 87
6. अष्टभुजा शुक्ल – दु:स्वप्न भी आते हैं – पृ. 40
7. साहित्य अमृत – अगस्त २००० कविता विशेषांक – पृ. 46
8. भागवत रावत – युवा संवाद, अगस्त 2019 – पृ. 49



**डॉ. प्रिया ए.**
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाड़ी, कोट्टयम, केरल–686502
मोबाइल – 9447294227


●


KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

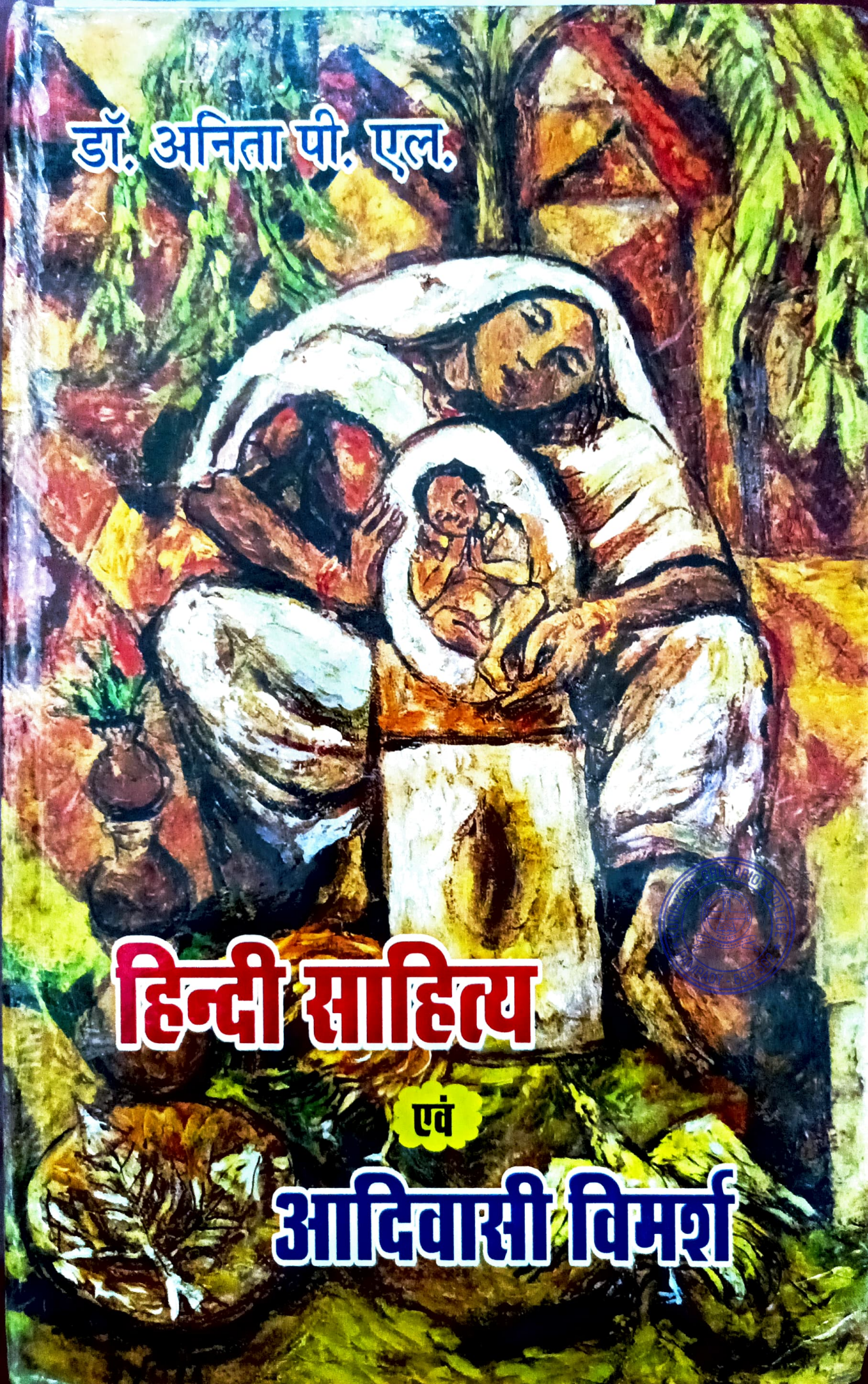

डॉ. अनिता पी. एल.

# हिन्दी साहित्य एवं आदिवासी विमर्श

**डॉ. अनिता पी. एल.**

**जन्म :**

कोच्चि, एरणाकुलम

**शिक्षा :**

एम.ए, एम.फिल, पीएच.डी

**प्रकाशन :**

- साहित्य का समकालीन परिदृश्य
- हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी समाज

**आलेख प्रस्तुति :**

अनेक राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में आलेख प्रस्तुत एवं सक्रिय सहभाग

**संप्रति :**

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महाराजास कॉलेज, एरणाकुलम–682011, केरला

**संपर्क :**

कलत्तुमपुरत्त हाउस, वाटर वे अवन्यू रोड, तैकूडम, वैट्टिला–682019, एरणाकुलम, केरला

**मोबाइल :** 9388036491


KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502


विद्या प्रकाशन
'सी' 449 गुजैनी,
कानपुर-208 022

E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
Website : www.vidyaprakashankanpur.com

ISBN 978-81-944045-0-7

9 788194 404507 >

₹ 995/-

# आदिवासी जीवन और संघर्ष की कविताई

डॉ. प्रिया ए.

आदिवासी वर्ग सदियों से समाज की मुख्यधारा से अलग होकर हाशिए का जीवन बिता रहा है। वर्तमान समय में आदिवासी समाज बदतर माहौल में जीवन यापन कर रहा है, उसके जंगल छीने जा रहे हैं। उसकी जमीन पर भूमाफिया कब्जा कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप उन्हें सदियों से विस्थापन का शिकार होना पड़ता है। उनका पलायन वर्तमान समय में भी जारी है। आदिवासी जीवनगत कटु यथार्थों एवं समस्याओं का आकलन अब उनकी अपनी वाणी से दर्ज हो रहा है। आदिवासी समाज के संघर्ष और उनके कारुणिक गाथाएँ उनकी अपनी आदिवासी भाषाओं में, अपनी बोलियों में तो पहले से ही हो रही हैं। आजकल कुछ आदिवासी कवियों ने हिन्दी में लिखने की पहल की है। इनमें प्रमुख कवि हैं – 'मुंडारी' भाषा कवि – रामदयाल मुंडा और अनुजलुगुन। 'कुडुख' भाषा कवयित्री ग्रेस कुजूर, महादेव टोप्पो, ज्योति लकडा, आलोका कुजूर और जसिन्ता केरकेट्टा। 'सन्ताली' भाषा कवयित्री – निर्मला पुत्तुल। 'हो' भाषा की कवयित्री सरस्वती गागराई। 'खड़िया' भाषा कवि ग्लेडसन डुंगडुंग।

भूमंडलीकरण के इस दौर में अर्थ सत्ता के संचालक उद्योगपति आदिवासियों के जल, जंगल जमीन के परम्परागत संसाधनों को हथियाने और उनको दोहन तथा अधिग्रहण करने में लगे हुए हैं, इसके कारण आदिवासी समाज को अपनी परम्पराओं से कट कर पलायन करना पड़ता है। पलायनवादी त्रासद परिदृश्य को प्रस्तुत करती है – मुंडारी भाषी कवि रामदयाल मुंड़ा की कविता 'कब तक काम करोगे'

"कब तक काम करोगे
खून सुखाते हुए
कब तक उद्यम करोगे पसीना बहाते हुए

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

**ISBN 978-81-944045-0-7**

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक | : | हिंदी साहित्य एवं आदिवासी विमर्श |
| संपादक | : | डॉ. अनिता पी.एल. |
| प्रकाशक | : | **विद्या प्रकाशन**<br>सी-449, गुजैनी, कानपुर-22<br>दूरभाष : (0512) 2285003<br>मो० : 09415133173<br>Website: www.vidyaprakashankanpur.com<br>E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com |
| संस्करण | : | प्रथम 2019 |
| शब्द सज्जा | : | शिखा ग्राफिक्स, कानपुर |
| मुद्रक | : | श्री पूजा प्रिन्टर्स, कानपुर |
| मूल्य | : | ₹ 995/- |

**Hindi Sahitya Evam Aadiwashi Vimarsh**

**Edited By : Dr. Anitha P. L.**

Price : Nine Hundred Ninety Five Only.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Proceedings of the Two Day National Conference on

# भारतीय साहित्य : समाज और संस्कृति

## (INDIAN LITERATURE : SOCIETY AND CULTURE)

*Editor*

**Dr.K.Vijaya Bhaskar Naidu**



**Department of Hindi**

**AYYA NADAR JANAKI AMMAL COLLEGE (AUTONOMOUS),**

(Affiliated to Madurai Kamaraj University, Madurai, Re-accredited (4th cycle) with 'A+' grade (CGPA 3.48 out of 4) by NAAC, Recognized as College of Excellence and Mentor Institution by UGC and STAR College by DBT and Ranked 58th at National Level in NIRF 2020)

**SIVAKASI – 626124, TAMILNADU**

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 50

**Published By**

**Curriculum Development Cell**
**AYYA NADAR JANAKI AMMAL COLLEGE (AUTONOMOUS),**
**SIVAKASI – 626124, TAMILNADU.**

ISBN: 978-93-83191-40-6

# उत्तराधुनिक समय और समकालीन हिन्दी कविता

डॉ.ए. प्रिया
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाड़ी, कोट्टयम,
केरल।

उत्तराधुनिक समय वैश्वीकरण का है। इस वैश्वीकृत समय में सारी दुनिया को एक भूमंडल मानकर पूँजीवादी खेमों ने साम्राज्यवादी ताकतों के नेतृत्व में सारे भूमंडल के सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि पर अपना वर्चस्व स्थापित किया है। इस वर्चस्व ने जनता के जीवन को एक ओर सरल एवं सुविधाओं से संपन्न किया और दूसरी ओर मानव को सवेदनशून्य बना दिया। हमारे वर्तमान समय की सब से बड़ी चुनौती यही है की पूरा समाज मूल्यों की गरिमा के क्षरण काल में जीवन बिता रहा है। यही इक्कीसवीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती है। समकालीन हिन्दी कविता वैश्वीकरण के विस्फोटनात्मक माहौल की सच्चाइयों का सामना कर रही है।

उत्तराधुनिक समय की सबसे बड़ी त्रासद सच्चाई यह है कि आम आदमी का जीवन कई प्रकार की विषमताओं से ग्रस्त है। ऐसे मानव विरोधी समय को चंद्रकान्त देवताले अपनी कविता 'विडंबना' में ऐसे पारिभाषित करते हैं - "अनगिनत खिड़कियाँ अन्धी / और गूँगे दरवाज़े / कोई भी जगह नहीं बची / जहाँ से दिखाई पड़े उम्मीद का गुम्बद / कोई भी सुरक्षित नहीं है इस वक्त / वह जो समझे हैं सब से ज़्यादा /बचा हुआ अपने को / बुलेटप्रूफ कठघरे में / बंद हैं उसके भी रास्ते।"[1]

वर्तमान समय की भीषणता को यहाँ व्यक्त किया है। आम आदमी के असुरक्षित हालत के प्रति समाज को अवगत कराने की पूरी आत्मीयता यहाँ विद्यमान है। मानव का प्रगतिशील जीवन अब भारी विपत्तियों से भर गया है।

त्रासद समय में समकालीन कवियों की सामाजिक पक्षधरता एवं कविकर्म के दायित्व को चंद्रकान्त देवताले अपनी कविता 'खुद पर निगरानी का वक्त' में यों अभिव्यक्त करते हैं - "हॉफ रही है कविता / कितना कर सकती है छातीकुट्टा / कह रही बार-बार / निगरानी रखो / जैसे दुश्मन पर वैसी ही खुद पर / चुटकी भर अमरता-खातिर / विश्वासघात न हो जाए / अपनी भाषा, धरती और लोगों के साथ।"[2] मानवविरोधी क्रूर-गलत समय में मनुष्य-मनुष्य के बीच विश्वास का संबन्ध टूट गया है। अविश्वास के इस माहौल में कवि अपनी भाषा जो हमारी अस्मिता है; उसे सुरक्षित रखने का यत्न करते हैं।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

ISBN 978-93-83191-40-6

work
career
business
performance
responsibility

life
health
family
friend
happiness

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

# WORK-LIFE CONFLICT OF THE EMPLOYEES OF BANKS

Dr. P. N. Harikumar • Dr. Vipin K. Varughese

From this study, it can be identified that heavy workload and overtime work are the main causes of discomfort experienced by the bank employees in their offices. Negative approach of top management and occupational stress in public sector banks, lack of support from subordinates or colleagues, and lack of teamwork in the private sector are the major reasons for work-life conflict. The employees in old private sector banks faced higher level of stress as well as work-life and family-life conflict than public and new private bank employees. Factors affecting work-life imbalance do more highly and adversely affect the female employees than the male employees. The management-related problems in public sector banks and teamwork-related problems in private sector banks are the main reasons for discomfort. The customer and teamwork-related problems are faced more by private sector bank employees, and job, management, family and strain-related problems faced by public sector bank employees. Bank employees face work-life conflicts due to the negative attitude of family, occupational stress, difficulty of time management, more number of customers, ineffective communication, nature of the job and absence of control over the work. The indifferent attitude of superiors, mental strain (stress), negative approach of top management, absence of sharing of job create family-life conflict among bank employees. Work-life conflict creates family-life conflict and family-life conflict creates work-life conflict among the employees of banks. Employees hope that the teamwork and flexible working hours will help to balance work-life and support from spouse, and support from family members will help to balance family-life. Counselling and superior - subordinate relationship are the main factors that create work-life balance for the public sector bank employees and family friendly policies and appreciation for the private sector bank employees.

**Dr. P.N. Harikumar** is working as Professor of Commerce, School of Bsiness Management and Legal Studies, University of Kerala, Thiruvananthapuram, Kerala. He did his M.Com (Finance) in SVRNSS College, Vazhoor, Kottayam, Kerala and passed with First class in 1991, and completed his M.Phil (Finance) with A Grade in 1993 from the University of Kerala. He got his Ph.D in Commerce in 2006 from University of Kerala and also got second rank in the MBA degree examination of the same university in 2009. After MBA degree he got his second Ph.D in Management studies (Marketing) from the University of Kerala in 2013. He is one of the secretary of Commerce and Management Association of India (CMAI), Executive Member of Punjab Commerce and Management Association (PCMA), Life member of Indian Commerce Association (ICA) and Indian Accounting Association (IAA). He is the Chief Editor of an International Journal, COMMERCE AND MANAGEMENT EXPLORER, KEGEES JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE, SIVASAILAM JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE and SIVASAILAM BUSINESS RESEARCHER. Moreover, he is a member of the editorial board of six more national journals. So far he has published 145 research papers in the journals of both national and international repute with high impact factor. He has participated and presented papers in 36 international conferences in some of the best universities in India and abroad particularly in Thailand, Malaysia, Singapore, Taiwan, Vietnam and Philippines. He has also participated and presented papers in more than 25 national seminars in India. He organized large number of Research methodology workshops, seminars and FDPs relating to the Applications of Statistical Techniques in Research, particularly, Multi-variate Analysis, Panel Data Analysis and Time series regression models. He has attended special research Training Programmes in Indian Institute of Management (IMM)-Kozhikkodu and Ahmadabad, Indian Institute of Technology (IIT) Gharagpur, Tata Institute of Social Science (TISS) Mumbai and International Business School (IBS), Hyderabad and Punjab Technical University (PTU) Jalandhar. His specialization is Applications of Quantitative Methods in Research. 10 PhDs have been awarded under his guidance. Currently 6 research scholars are working under his guidance in Mahatma Gandhi University. He is a chief resource person in UGC-Academic Staff Colleges of Mysore University, Bangalore University and SV University, Thiruppathi, Kannur University and University of Kerala for Refresher Courses in Commerce and Management and other subjects of social science.

**Dr. Vipin K Varughese** is working as Assistant Professor in the post-graduate and research department of Commerce, KG College, Pampady, Kottayam, Kerala. He has published many papers in journals of National and international repute.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

**ABHIJEET PUBLICATIONS**
4658-A, Ambika Bhawan, First Floor
21, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002
Tel. 011-23259444, 65698474
e-mail: info@abhijeetpublications.com
www.abhijeetpublications.com

₹ 1160/-

ISBN: 978-93-88865-39-5

# WORK-LIFE CONFLICT OF THE EMPLOYEES OF BANKS

**Dr. P. N. HARIKUMAR**
Associate Professor & Head, Research and PG Department of Commerce, Catholicate College, Pathanamthitta, Kerala

**Dr. VIPIN K. VARUGHESE**
Assistant Professor
Department of Commerce
Kuriakose Gregorios College, Pampady,
Kottayam, Kerala.

Prof.(Dr.) Benny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

**ABHIJEET PUBLICATIONS**
**NEW DELHI 110002**